

भादरवा सुद ७, सोमवार ता. २९-८-१९६०
ऋषभजिन स्तोत्र-गाथा-२७ थी ३०, प्रपचन-८

वह पञ्चनंदी पंचविंशति नामका ग्रंथ है. 'पञ्चनंदि' अंक महान आचार्य द्विगंबर संत हो गये हैं. भावलिंगी संत. करीब ६०० साल पहले (हुअे हैं). वनवासी संत थे, आत्मज्ञानी ध्यानी आत्मामें छद्दी-सप्तम भूमिका जिनको प्रगट हुई थी. जैसे भावलिंगी संत (थे). अध्यात्मकी दृष्टिका भी उसमें बहुत कथन है और धर्मीशुवको भगवानकी भक्ति, पूजाका भी भाव आता है. है शुभभाव, है शुभभाव, वह धर्म नहीं है तो भी शुभभाव धर्मीको आये बिना रहता नहीं.

मुमुक्षु :- शुभका अर्थ क्या होता है?

उत्तर :- शुभका अर्थ पुण्यबंधका कारण, धर्म नहीं. लेकिन वह बात श्रवणमें-धर्मका श्रवण करना ऐसा भी शुभभाव आता है, कथन करना, उपदेश करना ऐसा भी शुभभाव धर्मीको आता है. शुभभाव आये नहीं तो वीतराग हो जाये. और शुद्ध श्रद्धा-ज्ञानकी परिणति होने के भावबूद्ध जबतक शुद्धउपयोग अंतरमें रहे नहीं, तबतक ऐसा शुभभाव आये बिना रहता नहीं. भगवानकी वाणी श्रवण करना, सुनाना, वांचन करना, पृच्छना करना, उसका उत्तर सुनना, उसका विचार विकल्प द्वारा करना वह सब शुभभाव ही है. मोतीवावज! शुभभाव ही है.

वह शुभभाव, धर्म भूमिकामें कर्मधारा रूप राग उसकी भूमिकाके योग्य यौथे गुणस्थानमें समकितिको अविरत सम्यग्दृष्टिको भी आता है, पंचम गुणस्थानमें श्रावकको और छठे गुणस्थानमें मुनिको भी भक्तिका राग आता है. वह भी यात्रा, भक्ति, पूजा, दया, दानका भाव आता है, वह शुभराग है. नेमयंडभाई! पंच महाप्रतका भाव आता है कि नहीं? पंच महाप्रत भी शुभराग है, शुभउपयोग है. धर्म नहीं. वास्तवमें धर्मका कारण भी नहीं है. तो भी भूमिकामें सर्वज्ञपद अपना निजपदका ज्ञाता-दृष्टाका भान हुआ तो सर्वज्ञ परमात्मा जो हो गये उनकी भक्ति, पूजाका श्रवण, मननका, विनय करनेका जो भाव है (वह) सब शुभभाव ही है. जैसे भगवानकी पूजा, भक्तिका भी भाव आता है, उसका नाम शुभभाव है.

उस शुभभाव को मिथ्यात्व माने वह मूढ श्रव है, अज्ञानी है. अशुभ भी आता है. सम्यग्दृष्टिको अशुभ नहीं आता? स्त्रीका विषय-भोग, राग, धंधा-पानी करनेका भाव अशुभ आये बिना रहता है? पंचम गुणस्थानमें, यौथे गुणस्थानमें भी अशुभभाव तो आर्तध्यान, रौद्रध्यान है, आता है और रौद्रध्यान, आर्तध्यान जब हो, तब उससे बचनेको

ऐसा शुभभाव दयाका, दानका, पूजाका, भक्तिका, व्रतका, तपका वल सब शुभभाव है, आते हैं. आचार्य मलाराज वारुन करते हैं. कोरु अकेला निश्चयाभासी लो जाये कि नली, आत्मामें शुभभाव आते हैं तो वल अधर्म है और उसको मिथ्यात्व मानना वल बात सखी नली है. समजमें आया? कठिन बात. लजरीमलज्ज! शुद्धभावका भान नली अथवा शुभभावमें धर्म मान लेते हैं, अथवा शुभभावमें मिथ्यात्व मान लेते हैं, दोनों बात लूठी है. कैसे उसका मिलान करना? ..खंढज्ज! लोग कलते हैं, व्यवलरका लोप लो जाता है. सुन तो सली. व्यवलर तो, मलान कुंडकुंदाचार्यदेव ... मलान, सर्वज्ञ परमात्मा लुअे उससे पहले तीर्थकरदेव छन्नस्थ (दशामें थे), तल छठी-सातवीं लूमिकामें विचरते हैं तो उनको ली शुभउपयोग तो आता ली है, लोता ली है. वल मिथ्यात्व नली है, अज्ञान नली है. वल अधर्म है. अधर्म अर्थात् आत्माका स्वभाव शुद्ध श्रद्धा, ज्ञान, रमणतासे विद्ध है तो उसको अधर्म ली कलते हैं. लेकिन अशुभभाव अधर्म है, उसकी तुलनामें शुभभावके अधर्ममें मंढ कषाय है. उसको ज्ञानी जानते हैं कि पुण्यअंधका कारण है. उसके इलमें श्रवण, मननका, वीतरागकी वाणी आदि मिलना लोता है. उसमें आत्माकी शांति उसके कारणसे नली लोती, धर्म उसके कारणसे नली है, लेकिन आये बिना रलता नली. या तो अकेले निश्चयमें खला जाये, या अकेले व्यवलरसे धर्म मानकर भुश लो जाये कि लमने कर विया धर्म.

आचार्य कलते हैं, देओ! रद गाथा लो गल. जंगलमें विचरनेवाले छठे-सातवें गुणस्थानमें बिराजमान मुनि भावलिंगी, अप्रमत्त दशा आत्माका आनंढ, शुद्धोपयोग (वर्तता है). क्षणमें शुद्धउपयोग आता है और क्षणमें छठी लूमिकाका शुभराग आता है. प्रलुकी लक्ति करते हैं. खांवर तक आया है. लगवानके अष्ट प्रातिलार्यका वारुन करते हैं. अक तो अस्तित्वका वारुन करते हैं कि लगवान हैं उनको अष्ट प्रातिलार्य थे. समवसरण था, धर्मसभा थी. देव, समकिली ली लक्ति करनेको आते हैं. रन्द्रों अकावतारी-अकलवतारी, असे रन्द्र ली लगवानकी लक्ति करते थे. उसमें खंवर तक आ गया. छत्र, खंवर, सिलसन, अल पुष्पवृष्टि अष्ट प्रातिलार्यमें है न. देव पुष्पवृष्टि करते हैं न. देवों आकर लगवानके समवसरणमें पुष्पवृष्टिकी लक्ति करते हैं. उसके अलाने ये पुष्पवृष्टि क्या है, उसका थोडा अवंकार लगाकर आचार्य मलाराज लक्ति करते हैं. र७वीं गाथा.

विहलीकय पचसरे पंचसरो जिण! तुमम्मि काऊण।

अमरकयपुष्फविट्ठी, छला इव बहु मुअइ कुसुमसरो।।र७।।

‘हे लगवान जिनेन्द्रदेव! आपके सामने जिस कामदेवके पांथो बाण निष्कल लो गये हैं...’ बाण निष्कल लो गये. क्या कलते हैं? ये पांथ रन्द्रियोंके विषय हैं न? विषय. उसे कामदेवकी उपमा देते हैं. पांथ रन्द्रियके विषय, उसका जो राग. हे लगवान! रन पांथ रन्द्रियोंके कामबाणने आपको विषयके बाण मारे, लेकिन आपके आगे निष्कल

हो गये. आप वीतराग अरागी अंतर आनंदकी दृशामें परिणामित होकर उस कामबाणको निष्कल कर दिया. कामबाणकी असर आपको कुछ नहीं. बड़े-बड़े कितने ही देव धारण करनेवाले काम, स्त्रीका विषय अथवा प्रशंसा आदिके शब्दके रागमें घुस जाते हैं.

प्रभु! देवोंने आप पर जो पुष्पवृष्टि की वह क्या है? हम क्या मानते हैं? कि पांचो बाण निष्कल हो गये. 'ऐसा वह कामदेव, देवों द्वारा आपके उपर की कुछ जो पुष्पोंकी वर्षा,...' पुष्पवृष्टिके बलाने 'मानो अपने पुष्पबाणोंका त्याग कर रहा है, ऐसा भावूम होता है.' आह्लाहा..! उसमें भी भक्ति उनको भासित होती है. देजिये! ईन्द्र अकावतारी हो. शकेन्द्र और उसकी शचीरानी, दोनों अकभवतारी होते हैं. वहांसे निकलकर, अक भव धारणकर, केवलज्ञान पाकर दोनों मोक्ष जानेवाले हैं. अनादि जितने शकेन्द्र और उसकी शचि राणी होती है (अकावतारी ही होते हैं). शचि उत्पन्न होनेके कालमें तो मिथ्यात्व सहित उत्पन्न होती है. स्त्री है न. लेकिन बादमें आत्मज्ञान, सम्यग्दर्शन प्राप्त करती है. वह रानी और उसका पति ईन्द्र, दोनों आभिरका मनुष्यदेव धारण करके मुक्ति प्राप्त करते हैं. वह ईन्द्र आकर पुष्पवृष्टि करता है और देव आकर भगवानके समवसरणमें (पुष्पवृष्टि करते हैं). तो कहते हैं, प्रभु! वह पुष्पवृष्टि नहीं है. तो क्या है? कामबाण निष्कल गया, कामदेव निष्कल गया तो कामदेवने पुष्पोंकी आपके उपर वर्षा की. अलो.. धन्य है, धन्य है, महाराज! वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा आपकी वीतरागदृशा, उसमें हमारा कामबाण आपके पास निष्कल गया.

भावार्थ :- 'आपके अतिरिक्त जितने देव हैं, उनको कामदेवने मार-मारकर वशमें कर लिया है.' किसीको प्रशंसाने, किसीको स्त्रीके कटाक्षने, किसीको स्त्रीके विषयसे, किसीको जगतके मानसे सब होने लुभे, छेदित लुभे सभी देवोंको घाव लगे हैं. आपके अतिरिक्त कोई देव सच्ये देव रहे नहीं. कामबाणने उसको घाव मारा है, घायल कर दिया है, घायल कर दिया है. कामबाणने उसको मार-मारकर घायल कर दिया. रागमें अकाकार कर दिया.

'किन्तु हे प्रभो! जब वही कामदेव, अपने बाणोंसे आपको वश करने आया, तब आपके सामने उसके बाण, कुछ कर ही नहीं सके.' कुछ कर ही नहीं सके. वीतराग.. वीतराग. अपने आनंद स्वप्नमें लीन हो गये, प्रभु! आपको कामबाणका विकल्प कहांसे हो? आपके निर्विकल्प आनंदमें आप जुलते थे, उसके इवस्वप्न आपको केवलज्ञान हो गया. आपके सामने वह कुछ कर नहीं सका. 'ईसलिये उस कामदेवके समस्त बाण, आपके सामने विफल हो गये.' इव बिनाके लुभे. उसका कुछ इव-राग उत्पन्न नहीं कर सका. 'जिससे भावूम होता है कि जब देवोंने आपके उपर झूठोंकी वर्षा की...' यह बात सत्य होगी कि नहीं? समवसरण धर्मसत्ता होती है वहां अमी भगवानके पास धर्मसत्ता है. श्री सीमंधरप्रभु बिराजते हैं. वहां भी अष्ट प्रातिहार्य सदा होते हैं. देव

पुष्पवृष्टि करते हैं. ये क्या? नेमचंद्रभाई! पुष्पवृष्टि कर सके नहीं, जड़की क्रिया कर सके नहीं, परद्रव्यका परिणामन अपने अधिकारकी बात नहीं है. कौन कहता है अधिकारकी बात? परंतु आत्मज्ञानी धर्मात्मा सम्यग्दृष्टिको ऐसा शुभभाव आता है, तब ऐसी वृष्टिकी क्रियाका उसका काल होता है, उसके कारणसे होता है. उसमें शुभभावको निमित्त कहनेमें आता है. कर्ता नहीं. सम्यग्दृष्टि उस शुभभावका कर्ता भी नहीं है. ये बड़ी कठिन बात. कहां गये? धन्नावावज्ज! शुभभावका कर्ता नहीं है तो करता क्यों है? अरे..! सुन तो सही. प्रभु! तुझे चैतन्यतत्त्वकी वीला (मावूम नहीं).

स्वभावका सागर भगवान, उसकी दृष्टि दुर्घ तो स्वभाव जिसको प्रगट हुआ तो उसके उपर पुष्पवृष्टि करते हैं. वह क्रिया तो उस समय पुष्पकी लोनेवाली परमाणुके क्रमबद्धमें आती है. उसमें सम्यग्दृष्टिका शुभभाव निमित्त पडता है. निमित्त पडता है उसका अर्थ? वह निमित्त हुआ तो वहां (कार्य) हुआ ऐसा नहीं. लोनेवाला था. वह बात जगतको नहीं बैठती. लोनेवाली थी तो ईन्द्र, देव घरपर बैठे रहे तो वहां क्यों नहीं दुर्घ? सुन तो सही, प्रभु! तुझे चैतन्यकी वीला (मावूम नहीं है). उसका शुभभाव होता है, तब ऐसी क्रिया जो लोनेवाली है उसके कालमें हुआ बिना रहती नहीं. उसके शुभभावसे नहीं. शुभभावसे क्रिया नहीं दुर्घ, शुभभावसे धर्म नहीं हुआ. ..चंद्रज्ज! कठिन बात, भाई! शुभभाव आया उससे अपने चैतन्यमें शांति नहीं (होती) और शुभभावसे उस पुष्पकी क्रिया नहीं होती. अरे..! ये (बात). समझमें आया? लेकिन वह आये बिना रहता नहीं और वह क्रिया होती है तो उसके कारणसे (होती है). शुभभावके कारणसे नहीं लेकिन लोनेवाली क्रियासे होती है. मोतीवावज्ज!

लोगोंको तत्त्वका (ज्ञान नहीं). नौ तत्त्वकी भिन्न-भिन्न पृथक् क्रिया है, वह क्या है और कैसे होती है, मावूम नहीं और परस्पर पकड लेते हैं, .. पकडकर चले जाते हैं. शुभभाव, शुभभाव धर्म है, चलो, भैया! करते-करते धर्म हो जायेगा. ईन्द्र भी करते हैं. क्या ईन्द्र अधर्म जानकर करते हैं? तो उसको भी धर्म है? नहीं. धर्म नहीं. धर्म तो रागरहित अण्ड चैतन्य ज्ञाता-दृष्टा की क्रियाका परिणामन होना वही धर्म है. लेकिन धर्म की पूरी परिणति जबतक नहीं होती तो ईन्द्र जैसे पुष्पवृष्टि करते हैं. कोई कहता है, उसमें हिंसा होती है. कोई ऐसा करता है. गडबडी का पार नहीं. ईन्द्र आकर ऐसा करे, देव आकर पुष्प बरसाये उसमें हवाके (ज्वका) घात नहीं होता? विमानमें बैठकर आये उसमें पुष्प की हिंसा होती है. सुन तो सही. धर्मिक शुभभावकी किमत तुझे मावूम नहीं. शुभभाव रागकी मंदता है, पुण्यबंधका कारण है. उसमें सातिशय पुण्य बंधता है. मिथ्यादृष्टिको ऐसा शुभउपयोग आता है उसमें निरअतिशय पुण्य है. उस पुण्य के इलमें वाणी, तीर्थकरका योग ऐसा निमित्त मिलता है. लेकिन उस निमित्तसे लाभ नहीं है, ऐसा प्रथमसे मानते हैं. ऐसी

बात है, भाई! समझमें आया?

कहते हैं, उस समय 'वह झूलोंकी वर्षा नहीं थी,...' वह झूलोंकी वर्षा नहीं थी. क्या कहते हैं? भगवान! वह झूलकी वर्षा नहीं है. हम तो देखते हैं कि कामबाण आपपर डावा वह निष्कल गया, ऐसी पुष्पवृष्टि करते हैं. ऐसा हम तो पुष्पवृष्टिमें देखते हैं. ओहो..! 'वह कामदेव स्वयं अपने पुष्पबाणोंको ईक रहा था. क्योंकि संसारमें यह बात देखनेमें आती है कि कुछ समयके बाद जब जो भी काममें नहीं आती...' समय पर जो भी काममें नहीं आती 'उसको मनुष्य छोड़ देते हैं,...' छोड़ो. वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा,... सब देव कोई श्री द्वारा होने गये, कटाक्षके द्वारा होने गये, विषयसे होने गये, भोगसे होने गये. वीतराग कामदेवको जतनेवाले अरागी आत्माकी जिसकी परिणति है, उसपर तो पुष्पवृष्टि ही करनी चाहिये. उसके बाण निष्कल गये तो पुष्पवृष्टि की. वह लिया. २८.

एस जिणो परमप्पा, गाणोण्णाणं सुणह मा वयणं।

तुह दुंदुही रसंतो, कहइ व तिजयस्स मिलियस्स।।२८।।

दुन्दुभी. भगवान समवसरणमें बिराजते हैं. वे तो वीतराग है. दुन्दुभी नगाडा. मंगल बाजे बजते हैं न सुबल. जैसे मंगल बाजे-दुन्दुभी. जैसे तो साढे बालर कोड बाजे बजते हैं. भगवान के समवसरणमें. ये क्या? अक ओर निर्विकल्प वीतरागता. जिसमें गुण-गुणीके भेदका विकल्प करे तो वह भी पुण्यबंधका कारण है, धर्म नहीं. ऐसी दृष्टि अंतरमें करके वीतराग हुआ तो कहते हैं कि वहां दुन्दुभी बजती है. समवसरणमें बडा नगाडा, दैवी नगाडा (बजता है). यहां भी पुत्रकी शादी होती है तब ऐसा कुछ करते हैं न? पुत्रका ब्याह होता है तब करते हैं. नगाडा बजाते हैं. वहां लडका था न? हम अजमेरमें थे तब. बालयंदज के घरपर कुछ था. नगाडा बजता था. क्या है? पुत्रके यहां पुत्रजन्म हुआ है. साधारण मनुष्य होनेपर भी सुबल नगाडा बजाते हैं. हम वहां थे. अरुणा मुलूर्त होता है. ये तो साधारण पुण्यवंत.

(यहां तो) तीर्थकर सर्वज्ञदेव, उसमें तीर्थकर आदिश्वर भगवानका कथन है. ऐसा पुण्य, उसकी बराबर प्रतीत करनी चाहिये. उसके इलमें देव दुन्दुभी-नगाडा बजाते हैं. देव. यहां कैसे देकर बजनेवालेको अरुणे मुलूर्तपर बुलाना पडे. वहां देव आकर नगाडा बजाते हैं. क्या कहते हैं? 'हे भगवन्! आपकी बजती हुई...' बजती हुई. आपका 'दुन्दुभी (नगाडा) तीन लोकमें...' तीन लोकको ँकट्टा करके 'यह बात कहती है...' तीन लोक वहां ँकट्टा हो गया? उसके अभिप्रायमें ऐसा है कि यह दुन्दुभी तीन लोकका जिसे ज्ञान है (उनको सुनने हेतु) तीन लोकके जव आ जाओ. भगवानकी वाणी सुनो. भगवानके सिवा कोई दूसरेकी वाणी सुननी नहीं. रागी, द्वेषी, अज्ञानी कामबाणसे धायल हो गये

हो, उसका वचन नहीं सुनना. वीतराग सर्वज्ञ कामबाणसे रहित हो गये, उनकी वाणी सुनो. उस वाणीमें अमृत भरा है. अमृतकुंडमेंसे निमित्त लेकर वाणी अमृतकुंड रूप प्रवालमें बलती है. तीन लोकको ईकट्ठा लेकर दृन्दुभी कलती है. क्या सब ईकट्ठे हो गये? हम कलते हैं न. हम ईकट्ठे लेकर आते हैं. भगवानकी दृन्दुभी (बजती है) तो हम कलते हैं कि सब लोक ईकट्ठे लेकर (आओ). (दृन्दुभी) 'यह बात कलती है कि हे श्रुवो! वास्तविक परमात्मा तो भगवान आदिनाथ ही हैं;...' जिसने अनेकांत स्वरूप प्रगट किया. यहां तो (पहलेसे बात) लेकर आते हैं न. सर्वार्थसिद्धसे लेते-लेते अष्ट प्रातिहार्य तक आये हैं.

'भगवान आदिनाथ ही हैं; इनसे भिन्न कोई परमात्मा नहीं है,...' दूसरा कोई कर्ता परमात्मा जगतका, ईश्वर और ऐसा-वैसा सब बूठ है. परमात्मा हो तो साक्षी सर्वज्ञदेवकी सेवा करो. उनकी वाणी सुनो. वाणी सुनना तो शुभभाव है. नेमचंद्रभाई! ऐसा क्यों कलता है दृन्दुभी नाद? अरे..! भगवान! सुननेका राग धर्मीको आये बिना रहता नहीं. शुभराग है. गाणधरको आता है. संतों अकावतारीको (आता है). अंतर्मुहूर्तमें केवलज्ञान लेनेकी तैयारी हो उसके पहले भी भगवानकी वाणी सुननेका राग होता है. बादमें अंदर लीन हो जाये तो केवलज्ञान लेकर स्थिर हो जाये. लेकिन वाणी सुननेका प्रेम (होता है). संसारमें विकथा नहीं सुनता? धंधा ऐसा करना, ऐसा मशीन लगाना, ऐसा करना, ऐसा हो तो तुमको बहुत लाभ होगा. पचीस हजारकी आमदनी अक महिनेकी होगी. यहां सुनता है कि नहीं पापका भाव? केवलचंद्रभाई! यहां सब बात सुनता है. ये मशीन ऐसा होगा, इससे ऐसा होगा, ऐसा करोगे तो इसमेंसे इतनी महिनेकी कमाई बढेगी. महिनेकी पांच हजारकी है, दस हजार और बीस हजारकी हो जायेगी. ... धीरेभाई! जगतको...

कलते हैं, भगवान! वाणी नहीं, वह नगाडा ऐसा कलता है कि 'इनसे भिन्न कोई परमात्मा नहीं है. इसलिये तुम दूसरेका उपदेश मत सुनो,...' अक वीतराग दृष्टि और वीतराग रमणता लुई, उसकी वाणीमें वीतरागता ही निकलती है. अकेला वीतराग. निमित्त, रागकी उपेक्षा करवाता है और स्वभावकी अभेद दृष्टि करवाता है. ऐसी दृष्टि करवाता है ऐसा उपदेश है वही सुनने लायक है. समजमें आया? सुनते वक्त तो शुभराग है. है, शुभराग तो .. आये बिना रहता है? लेकिन शुभउपयोगमें सुना क्या? वीतरागी उपदेश. वीतरागी उपदेशका अर्थ? अलो..! तेरा स्वरूप परमात्मा आनंदकंदसे भरा है. उसमें भेद भी न कर. अभेद दृष्टि कर और अभेदमें लीनता कर. ऐसा भगवानका उपदेश है, दूसरेका ऐसा उपदेश होता नहीं. अज्ञानी गडबडी करते हैं, धायल हो गये हैं तो उसका उपदेश सुनने लायक नहीं है. 'इसलिये तुम दूसरेका उपदेश मत सुना,...' अस्ति-नास्ति की. दूसरेका यानी मिथ्यादृष्टि वस्तुका स्वरूप नहीं जानते हैं, ऐसा कोई साधु नाम धारण करता हो या देव नाम धारण करता हो, उसका उपदेश सुनने लायक नहीं है. ये देवकी परीक्षा

करते हैं कि देव जैसे होते हैं. और देवकी वाणीमें भी ऐसी वाणी है. देजोन! वर्तमानमें तो धतनी गडबडी हो गयी है. अभी सर्वज्ञकी वाणी क्या कलती है और क्या समझते हैं, उसका लक्ष्य और रुचिकी भी भबर नहीं. ऐसा कलते हैं, देजो! भगवानने ऐसा कल. क्या कल? भगवानने कल है कि निमित्तसे हुआ, निमित्तको प्राप्तकर हुआ, व्यवहारको प्राप्तकर हुआ. वल सब कथन तो व्यवहारनयके हैं. तेरा स्वभाव पाकर तेरी दशा होती है. ऐसा भगवानका उपदेश है, उसको सुनो, दूसरेको नहीं.

भावार्थ :- 'मंगल कालमें जिस समय आपकी दुन्दुभी आकाशमें शब्द करती है...' मंगल कालमें. औरतें नहीं गाती शादीके प्रसंगमें? आज तो वेणुवं वायुं... ऐसा कुछ बोलती है न? क्या? वेणुवा वाया. प्रभाती गाते हैं. पापकी प्रभाती. धर्मकी प्रभाती बोले वल अलग. ये तो, वेणुवा वाया ने सोना समो सूर्य उज्यो, थाण लर्यो मोतीअे ने... ऐसी सब बातें करते हैं न? उसको लर्ष है, पापका. पापका लर्ष है. वलं धर्मको मंगल आज्ञा बजता है. यलो, भगवानकी वाणी सुनने. त्रिलोकनाथकी वाणी. चार ज्ञान, यौदल पूर्वको धारण करनेवाले, अंतर्मुहूर्तमें चार ज्ञान उत्पन्न करनेकी ताकत, यौदल पूर्व और बारल अंग की रचना करनेकी ताकत (रजनेवाले) भगवानकी वाणी सुनते हैं. वली सुनने लायक है, दूसरेकी वाणी सुनने लायक नहीं है.

दूसरा, जो कोर्र प्राणी पुण्य, राग, निमित्तसे कल्याण लोगा, ऐसा बतानेवाला हो तो वल कथा धर्मकथा नहीं है, परंतु पापकथा है. समझमें आया? धत्रालालज! वल विकथा (है). विकथाका नाम ऐसा है, भाई! दर्शनभेदनी. दर्शनका भेद मिथ्यात्व, सम्यग्दर्शनका नाश करनेवाली, भेद करनेवाली. जो कोर्र कथन उपदेशमें ऐसा आवे कि तुजे शुभरागसे धर्म लोगा, पुण्य करते-करते कल्याण लोगा, लमारे समीप दृष्टि रजो तो तेरा कल्याण लोगा. और क्रियाकांडमें घुस ज्ञओ बराबर, क्रिया करते-करते, करते-करते ऐसा शुभराग हो ज्ञय कि क्रि शुभराग इटकर वीतरागता हो ज्ञयेगी. ऐसी कोर्र कथा करता हो तो समकितभेदनी-समकितका नाश करनेवाली है. विकथा है. ऐसी विकथा मत सुनो. धत्रालालज! देजो! भक्ति करते हैं. आला..! वीतरागी संत मलामुनि भावलिंगी परमेश्वरपदको अंदरसे त्वरासे गलण कर लेते हैं. त्वरासे, वेगसे. कलो, समझमें आया?

'उस समय उसके बजनेका शब्द निष्कल नहीं है, किन्तु वल धस बातको पुकार-पुकार कर कलती है...' पुकार-पुकार कर कलती है, देजो! 'हे लव्य जवों! यदितुम परमात्माका उपदेश सुनना चाहते हो तो भगवान श्री आदिनाथका दिया हुआ उपदेश...' भगवानने जो उपदेश दिया है वली सुनो, वली सुनने लायक है. 'किन्तु धनसे भिन्न जो दूसरे-दूसरे देव हैं, उनके उपदेशको अंश मात्र भी मत सुनो...' सुननेको ज्ञते हैं न. यलो भाई! कुछ मिलेगा. धूल मिलेगी. यलो भाई! वलं उपदेश यलता

है. वीतरागी तत्त्व क्या, सर्वज्ञके तत्त्वकी अभेद दृष्टिका विषय क्या और अभेदकी दृष्टिमें भी जबतक पूर्ण अभेद न हो, तब भेदमें राग क्या आता है, उसकी मर्यादा क्या, उसकी जबर नहीं और कथन करते हैं कि चलो, भाई! थोडा तो लाभ मिलेगा न. ..चंद्रभाई! लाभ मिलेगा मिथ्यात्वका. समझमें आया? विपरीत मान्यता-उलटी मान्यताका लाभ (मिले), वह धर्मकथा नहीं. 'अंश मात्र भी मत सुनो...' क्यों? भाई! सुननेमें क्या है? वह तो परज्ञेय है. लेकिन सुननेमें तेरी कोई धृष्टता तो है कि नहीं? सुनेगा तो मुझे लाभ होगा. ऐसी तेरी मान्यता गूठी है. इसलिये अंश मात्र भी सुनना नहीं. ये क्या? वाणी नुकसान करेगी? लेकिन तेरे भावमें उस वाणीमें आनंद आता है, उत्साह आता है कि उसमें कुछ लाभ होगा वह तेरा भाव ही गूठा है. अंश मात्र सुनना नहीं.

'क्योंकि यदि परमात्मा है तो श्री आदिश्वर भगवान ही हैं, इनसे भिन्न लोकमें दूसरा कोई परमात्मा नहीं है.' वह तो आदिश्वर कहे कि सर्व तीर्थंकर अेक आदिश्वरमें सब आ जाते हैं. २८.

रविणो संतावयरं, ससिणो उण जड्डयाअरं देवा

संतावजडत्तहरं, तुम्हच्चिय पहु पहावलयां॥२९॥

आलाहा..! चंद्र, सूर्यको भी हलका बना देते हैं. प्रभु! आपका चैतन्यप्रकाश और आपके सर्वज्ञमें आया जो तत्त्व, उसके आगे इस चंद्र, सूर्यको हम क्या अधिक कहें? दुनिया कहती है, चंद्र अधिक है, सूर्य अधिक है.

हे भगवान! हे प्रभु! 'सूर्यका प्रभासमूल तो मनुष्योंको संताप करनेवाला है...' सूर्यकी प्रभा. ताप लगता है न? आताप, आताप. गर्मी, गर्मी, गर्मी. भागो, भागो. .. गर्मी, गर्मी, गर्मी. सुनता हो तो .. हम अेक जगह गये थे तो उसका लड्डारक सुनने आया. हाथमें पंजा था. ये कोई तेरा सुननेका लक्षण है? देखा था कि नहीं? उसने देखा था, साथमें थे न. हाठ-माठ करके (आये), पंजा भी ऐसा. मयुरपंज. बैठा. मानो भगवान! क्या है? तू भगवान है? विनयकी जबर नहीं. सुननेमें कितनी विनयता, नम्रता, योग्यता, पात्रता होती है, उसकी भी जबर नहीं. भगवानकी वाणी सुनने आया है, वहां जैसे-जैसे पंजा चलाता है. मानो मैं बडा! लड्डारक. ईश्वरचंद्रं! अरेरे..! जैनदर्शनमें जैसे ही रोटी जानेवाले निकलते हैं.

भगवानकी वाणी कैसी! ईन्द्र, सिंह, बाघ भगवानकी सभामें (बैठते हैं). बाघ और सिंहका तो शरीर बहुत गर्म होता है. ईतनी गर्मी ... गर्मी होती है, हवा लगने दो, हवा लगने दो. ओहोहो..! तेरा सुननेका लक्षण ही सख्या नहीं है. सुननेका भी लक्षण सख्या नहीं है. .. कला न? अंदर. आता है न? अंदर है. ऐसी नम्रता.

कहते हैं, भगवानकी वाणी सूर्यके साथ मिलान करनेमें आती है, ऐसा है नहीं. क्योंकि

वह सूर्य तो मनुष्योंको संताप करनेवाला सूर्य है. 'तथा चंद्रमाका प्रभासमूल, जडता करनेवाला है.' चंद्र उगता है, शीतलता (लोनेसे) मनुष्योंको निद्रा आ जाती है. शीतल ठंडी हवा आती है न? वह जडताका कारण है. अथवा चंद्रमाकी शीतलतामें मनुष्य जगता हो तो जडताकी-विषयकी वासना रात्रिको उत्पन्न होती है. चंद्र जडताका कारण है. .. सूर्य संतापका कारण है और चंद्र जडताका कारण है. उसमें कोई मलत्ता या अधिकता है नहीं. कलो, समझे? 'जडता करनेवाला है.'

'किन्तु हे पूज्यवर!' हे पूज्यवर! आप तो पूजनेवालायक हो. 'आपका प्रभासमूल, संताप व जडता, दोनोंका ही नाश करनेवाला है.' आपकी वाणी सुने... भगवानको भी प्रभामंडल होता है न. उसमें नजर पड़े तो सात भव टिपते हैं. और चैतन्यप्रभु सर्वज्ञ उसमें नजर पड़ जाये तो अपने स्वभाव सन्मुख होकर सम्यग्दर्शन हो जाये. ऐसा प्रभासमूल मिथ्यात्व, संतापका नाश करता है. अचेतन जड भाव विकार, उसका नाश कर चैतन्यकी जगृति करनेवाला भगवान, आपका ही .. है. आप ही यथार्थ चंद्र, सूर्यसे दूसरी चीजकी उपमा आपको दे... चंद्र, सूर्यकी आती है? जयचंद्रभाई! आता है कहीं? किसमें? लोगरस किया है कि नहीं? चंद्रसे षिम्मलयरा आर्धतेसु अलियपयासयरा सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि.. पहले तो किया था कि नहीं? चंद्रसे षिम्मलयरा, षिम्मलयरा, षिम्मलतरा. हे भगवान! आप चंद्रसे निर्मल हो. तो कहते हैं, नहीं. चंद्र तो जडता लानेवाला है. रात्रिमें निद्रा लाता है अथवा विषयकी वासना (लाता है). यहां तो निमित्तका कथन है न. और सूर्यका आताप गर्मी, गर्मी, गर्मी (देता है). जैसे देस हैं कि वहां सूर्य (की धतनी गर्मी होती है कि) यमडी काली पड़ जाये. क्या कहते हैं? सिद्धी, सिद्धी. अरबस्तान, आङ्किा. यमडी अेकदम काली. आताप लगता है.

प्रभु! आपका प्रभासमूल जडताका नाश, विषय वासनाका नाश, अज्ञान-अचेतनका नाश और चैतन्यकी जगृति, और संताप, आकूलताका भी नाश करनेवाला है. निमित्तसे कथन है न, भैया? भक्तिमें तो निमित्त आता है न? उपादान, अंदर शुद्ध उपादानसे करे तब निमित्तका कथन उसमें आता है. ये दो पुस्तक आ गये हैं. जैनतत्त्व मिमांसा.

भावार्थ :- 'यद्यपि संसारमें बहुतसे तेजस्वी पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं, किन्तु हे पूज्यवर...' प्रभु! कोई भी तेजस्वी पदार्थ... देजो! ये मिलान करते हैं. आपके प्रभासमूल जैसा है उसका किसिके साथ मिलान होता नहीं. (कोई भी) 'उत्तम पदार्थ नहीं है, क्योंकि यदि हम सूर्यको तेजस्वी पदार्थ कहें तो उसकी प्रभा, मनुष्योंको अत्यंत संताप देती है, यदि चंद्रमाको उत्तम व तेजस्वी पदार्थ कहें तो...' यह बात भी बन नहीं सकती. क्योंकि चंद्रमाका प्रभासमूल जडता करनेमें समर्थ है. निमित्तसे (कथन है).

‘किन्तु हे जिनवर! आपकी प्रभाका समूह, संताप तथा जडता, दोनोंका सर्वथा नाश करनेवाला है, इसलिये आपकी प्रभाका समूह ही उत्तम सुभदायक है.’ ‘वचनामृत वीतरागना परमशांत रस मूण.’ बोलते हैं न? ज्योति आया है या नहीं? ‘वचनामृत वीतरागना परमशांत रस मूण, औषध जे भवरोगना...’ भवका ही नाश. पंचास्तिकायमें है कि जितभवा. भगवान! आप कैसे हो? पंचास्तिकाय शुरुआत (में आता है). भवको जितनेवाला जितभवा. और आपकी वाणी? चार गतिका भाव और उसका इल जे परतंत्र है, उसका नाश करनेवाली है. भव बतानेवाली, भवका इल (मिले) ऐसा आपकी वाणीमें है नहीं. सर्वार्थसिद्धका भाव जिस भावसे मिले उसका भाव बतानेवाले नहीं हो. मोतीवावज!

मुनिको जिस भावसे सर्वार्थसिद्ध मिलता है और तीर्थकरत्व मिलता है, वह भी भव है न? नहीं, आपकी वाणी तो भवछेदक है. भव और भवका कारण, चार गतिका जे कारणभाव है, (उसको) छेदनेवाली वाणी है. नहीं, उस रागका छेद कर. स्वभाव सन्मुख होकर शुद्ध परिणतिमें रहे, वह तेरी दशा और तेरा धर्म है. बीचमें शुभराग आता है, वह परज्ञेयकी भांति ज्ञाताको ज्ञाननेमें आता है. ज्ञाननेलायक है. ज्ञाननेलायकमें प्रयोजनभूत कलनेमें आया, आदरने लायक नहीं है. लेकिन आये बिना रहता नहीं. कितने ही ऐसा करते हैं, ये लोग सोनगढमें शुभभावको मिथ्यात्व कहते हैं. पेपरमें आता है, हां! जैन गेजेटमें आया था. जैन गेजेटमें नहीं, लेकिन जैनदर्शनमें आया था. वहां उदयपुरमें देखा था न. मज्जनवाव. कहां गये? उग्रसेनज! उग्रसेनके गांवमें. ऐसी चिह्नी चली थी, हमारे ज्ञानसे पहले. देओ, ये कहते हैं कि शुभउपयोग मिथ्यात्व है. अरे..! सुन तो सही. शुभउपयोगको मिथ्यात्व अज्ञानी कहते हैं. शुभउपयोगको मिथ्यात्व कौन कहता है? देव-गुरु-शास्त्रकी सखी श्रद्धा करना वह भी शुभउपयोग है. शुभउपयोग मिथ्यात्व है? है ही नहीं. उसको लाभदायक मानकर, धर्मकी पंक्तिमें उसका घुसाये कि उससे धर्म होता है, तो वह मान्यता मिथ्यात्व है. वह तो श्रद्धामें विपरीतता दुई. समजमें आया? बडा लेज लिजा है, जैनदर्शनमें ऐसा लिजा है. कूलचंद्रज सबका जवाब देनेके लिये तैयार थे. अक-अक अक्षरका. अरे..! सुन तो सही, प्रभु! तू क्या कहता है? किसको आरोप देता है?

यहां भगवानको कहते हैं, प्रभु! उत्तम पदार्थ तो आप ही हो. चंद्र और सूर्य उत्तम नहीं है. कलो, समजमें आता है? भगवानजभाई! इसमें सब गडबड करते हैं. कानजस्वामी शुभभावको मिथ्यात्व कहते हैं. कौन कहता है? तीन कालमें शुभभावको मिथ्यात्व कहनेवाला मिथ्यादृष्टि है. ईश्वरचंद्रज! और शुभभावको धर्म कहनेवाला भी मिथ्यादृष्टि है. कठिन बात, भाई! पढते नहीं, सुनते नहीं, विचार करते नहीं. पढे कहां-से? पढे तो उसका.. समजे?

रहता नहीं. उसका हृदय रहता नहीं-उसकी मान्यता रहती नहीं. 30.

मंदरमहिज्जमाणांबु रासिणिग्धोससण्णिहा तुज्झ।

वाणी सुहा ण अण्णा, संसारविसस्स णासयरी।।३०।।

ओलो..! दिव्यध्वनि. अब दिव्यध्वनि (की बात करते हैं). प्रातिलार्य हैं न अकेके बाद अके? 'हे भगवान् जिनेश! मंदरायवसे मंथन किये गये समुद्रके निर्घोष (बड़े भारी शब्द)...' मेरु पर्वतको दंड बनाकर. मेरु पर्वत अके लाभ योजन गिंचा. (उसका) दंड बनाकर समुद्रमें मंथन (करनेमें आये). जैसे दहीमें मंथनी होती है न? क्या कलते हैं? रवैया. ऐसा-ऐसा करते हैं कि नहीं? तो दहीकी छाछ लो जाती है. जैसे समुद्रमें मेरु पर्वत ... ऐसा .. निकला, उसमें-दहीमें भी आवाज निकलती है न? अके मन दही लो, उसमें गर्म पानी डाले तो ऐसी आवाज होती है अंदरसे.. ये तो मेरु पर्वत समुद्र में डालकर (दिलाये तो) ऐसी आवाज (होती है), प्रभु! आपकी ध्वनि ऐसी निकलती है. ओलोलो..! मनुष्यकी ध्वनि. समझमें आया? 'हे भगवान् जिनेश! मंदरायवसे मंथन किये गये समुद्रके निर्घोष (बड़े भारी शब्द) के समान आपकी वाणी ही शुभ है,....' गंभीर ध्वनि निकलता है. गर्जना होती लो. ओलोलो..! सलज, लां! जैसे बादलमें गर्जना होती है न? कौन करता है? कौन करे? वह तो सलज ऐसी वाणी लो जाती है.

भगवानकी वाणी.. अे.. मास्तर! भगवानकी वाणी कैसी है? विस्ता या प्रयोगसा? हंसते हैं. बर्य्यो! कहां गये विद्यार्थी? प्रश्न करते थे. भाई! भगवानकी वाणी गर्जनाकी उपमा दी है, लेकिन गर्जना विस्ता है और ये वाणी प्रयोगसा है. चैतन्यका उसमें निमित्त है. 'उसके समान आपकी वाणी ही शुभ है...' वाणी शुभ है. जड. भगवान! हम सुनते हैं तो हमको शुभउपयोग हमारे कारणसे हुआ. आपकी वाणी भी शुभ है. वाणी शुभ है, वाणी पूज्य है. आता है कि नहीं? वाणी पूज्य है. आलाहा..! भगवान! आप तो पूज्य लो, आपकी वाणी (पूज्य है). वाणी तो जड है, अचेतन है. वाणी जिस पत्रमें लिखते हैं वह भी अचेतन जड है. उसको पूज्यतासे नमन करना वह भी शुभभाव है, शुभउपयोग है. तो कलते हैं कि, शुभउपयोग आता तो है. आपकी वाणीको हम शुभ कलते हैं. हमारे शुभउपयोगमें वह निमित्त पडती है. शुद्धका भी निमित्त कलनेमें आता है.

आपकी वाणी अत्यंत शुभ है, अत्यंत शुभ है. जड. अन्य वाणी शुभ नहीं है. 'आपकी वाणी ही संसाररूपी विषका नाश करनेवाली है,....' संसारके विषको उतारनेवाली आपकी वाणी है. जैसे मंत्र (बोलते हैं) तो विष उतर जाता है. सर्प काटा लो. भगवान! निमित्तसे कथन है न. उतरे तब निमित्तमें ऐसा आरोप देनेमें आता है न? संसारका विष अनादिसे यढा है, विकल्प, राग, दया, दान, व्रत का शुभराग मेरी यीजको लाभ करेगा, ऐसी विषदृष्टि

जो कुछ है, आपकी वाणी जहाँ सुनते हैं तो संसारका नाश कर देती है. तब (वाणी) सुनी कलते हैं. समझमें आया? संसारमें तो ये करना है, .. करना है. कोई भी उदयभाव संसारका (हो), जिस भावसे तीर्थकर गोत्र बंधता है, षोडशकारणभावना भाते हैं, आता है न? कहां गये श्रीचंद्रज? है कि नहीं? क्या बोलते हो? भूल जाते हैं. आप पूरा दिन वहां बोलते हो. षोडशकारण भावना भाते-भाते, परमगुरु होय, परमगुरु होय. आता है कि नहीं? षोडशकारण तो शुभराग है, वह तो आस्रवतत्त्व है. समझमें आया? तो आस्रव तत्त्वकी भावना करनेवायक नहीं है. मोतीवालज! वह आये बिना रहता नहीं. जबतक वीतराग न हो, सम्यग्दृष्टि है, आत्मज्ञान (हुआ है), अभेद दृष्टिका भान है, लेकिन अभेदकी परिणति पूर्ण नहीं हो, तबतक वह तीर्थकर गोत्रका भी भाव आता है. लेकिन उसका भी नाश करनेवाली आपकी वाणी है. नाश, भवका भाव और भव, सबके विषको उतारनेवाली वाणी है.

‘जबकि अन्य वाणी,...’ दूसरेकी वाणी ‘संसार-विषका नाश नहीं करती.’ भगवान! आपकी ध्वनि... देजिये! ध्वनि तक आये. आठ प्रातिलार्य लेने हैं न? आपकी वाणीमें ही कोई अचिंत्य प्रभा है कि आपकी वाणी सुनते हैं उसकी दृष्टिमें संसार-विष रहता नहीं. क्योंकि आप संसारका नाश करके ही वीतराग हुअे हैं. और आपकी वाणीमें संसरण धृति (संसार), स्वभावसे जिसकर दूर होना जैसा उपदेश आपकी वाणीमें है ही नहीं. संसार-संसरण धृति संसार. उदयभावको संसार कलते हैं. उस उदयभावको तो नाश करनेवाली है. उसकी वाणीमें जैसा निमित्तत्वकी ताकत है. अपने शुद्ध उपादानसे जो अंतर अकाग्र हो, उसको जैसी वाणीमें निमित्तता जैसा कलनेमें आता है. नहीं तो अनंत बार निमित्त-वाणी भी सुनी. बराबर है? भगवानकी दिव्यध्वनि भी अनंत जेर सुनी. कल्पवृक्षका डूल, मणिरत्नका दीपक, (उससे) पूजा भी अनंत बार की. लेकिन उसकी क्रियाका कर्ता और बीजमें शुभभाव आया उससे मुझे धर्म होगा, जैसी मान्यताका शल्य रहा तो उसको आत्माका कुछ लाभ हुआ नहीं. कलें, समझमें आया?

विषका नाश करनेवाली दूसरे की वाणी (नहीं है). भगवान सर्वज्ञके सिवा, वीतराग के सिवा किसीकी वाणी विषका नाश करनेवाली नहीं है. श्रीमद्ने कहा है न? ‘जे स्वरूप सर्वज्ञे दीहुं ज्ञानमां, कही शक्या नहीं ते पण श्री भगवान जे..’ अमृत का समुद्र बलता है. जहां अमृत-समुद्र, सागर, शक्तिका सत्त्व जहां भरमार उछलती कुछ पर्यायमें पूर्ण परिणति कुछ, वह वाणी द्वारा कितना कहे? वाणी द्वारा कितना आता है? ‘जे स्वरूप सर्वज्ञे दीहुं ज्ञानमां, कही शक्या नहि ते पण श्री भगवान जे. ते स्वरूपने अन्य वाणी शुं कहे?’ प्रभु! पामर प्राणी, जिसे तत्त्व क्या है उसकी गंध-वासना भी नहीं है, वह वस्तुका स्वरूप कहे जैसा तीन कालमें बनता नहीं. तेरी वाणीमें जो यमत्कार है, जैसा

यमत्कार दूसरेमें नहीं. यमत्कार कब कलनेमें आता है? गणधर दिव्यध्वनि सुनते हैं कि नहीं? ईन्द्र सुनते हैं कि नहीं? बारह सभा है कि नहीं? बारह सभा वहां क्यों आती है? सुननेको आती कि नहीं? उसकी दृष्टिमें मावूम नहीं है? सम्यग्दृष्टि भी सुननेको आते हैं. उसकी दृष्टिमें मावूम नहीं है कि मुझे वाणीसे लाभ नहीं होगा? और वाणी सुननेमें शुभराग है, उससे भी मुझे चारित्र की वृद्धि नहीं होगी. मावूम नहीं है? बराबर मावूम है. लेकिन सुननेका भाव श्रोताका... चार ज्ञान और गणधरपद, चार ज्ञान लुभे हैं. और अपनी पदवी भी मावूम है, गणधर तो ईस भवमें मोक्ष ज्ञानेवाले हैं. मावूम है, उत्कृष्ट पदवी है, सब ऋद्धि उसके पास (है). ..ज्ञान आदि सब गणधरको उत्कृष्ट होता है. उस भवमें ही मुक्ति होनेवाली है, मावूम है फिर भी शुभराग श्रवण, मननका विकल्प आता है. आलाला..! कठिन बात, भाई! जहां निर्विकल्पकी बात करे वहां विषको उडा देती है. राग का विष. और कहे कि, बीचमें राग शुभउपयोग आता है, उसको शुद्धमें निमित्तका आरोप भी देनेमें आता है. साधक भी कलनेमें आता है. व्यवहारसे साधन कलो, साधक कलो. ऐसा कथन होता है. अनेकांत प्रभुका पंथ है. लेकिन अनेकांतका ऐसा अर्थ नहीं है कि रागसे भी कल्याण होगा और कल्याणस्वभावके आश्रयसे भी कल्याण होगा. ऐसा दो प्रकारका कथन अनेकांत नहीं है. वल तो अनेकांत मिथ्यादृष्टिका कथन है. कलो, समजमें आया? 30वीं गाथा पूरी लुई. भावार्थ (बाकी) है न?

भावार्थ :- 'हे भगवान! यद्यपि संसारमें बहुतसे बुद्ध...' बुद्ध ईत्यादि बहुत देव विद्यमान हैं. बुद्ध, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि .. जिनहें वीतरागता समजमें नहीं आयी है, सर्वज्ञपद नहीं है, उन सबको ले लेना. 'किन्तु हे प्रभो! जैसी आपकी वाणी (दिव्यध्वनि) शुभ तथा उत्तम है, वैसी बुद्ध आदिकी वाणी नहीं...' दूसरेकी नहीं है. 'क्योंकि आपकी वाणी अनेकांतस्वरूप पदार्थका वर्णन करनेवाली है...' ईस अनेकांतमें गडबडी चलती है. अनेकांत क्या? शुभरागसे भी धर्म होगा और निश्चयसे भी होगा, उसका नाम अनेकांत. ऐसा अनेकांत भगवानकी वाणीमें आया ही नहीं है. ..यंदृष्ट! समजमें आता है?

अनेकांत तो वल है कि परपदार्थ परपदार्थसे है और तेरेसे नहीं है. तेरा भाव तेरेसे है और परसे नहीं है. तेरे शुभभाव भी शुभसे है और शुद्धसे नहीं है. और शुद्धभाव स्वभावके आश्रयसे होता है, शुभभावसे नहीं. उसको भगवान अनेकांत कहते हैं. उलटी गडबड करे उसको अनेकांत कहते नहीं. मावूम भी नहीं. शास्त्र सुने और अंदरसे गडबडी करे. देभो! भगवानकी वाणी अनेकांत है. आया न? अनेकांतस्वरूप पदार्थका वर्णन करनेवाली है. अक-अक पदार्थ अपने द्रव्य स्वभावस्वरूप है, गुणस्वभावसे गुणस्वरूप भी है, पर्याय भी है. अक समयकी पर्याय त्रिकावमें नहीं और त्रिकाव पदार्थ अक समयमें आता नहीं. ऐसी

अनेकांत वाणी भगवान, आपकी है. दूसरेमें है नहीं. सर्वज्ञ एक समयमें तीन काल देभते हैं. 'वर्णन करनेवाली है...'

'जबकि वस्तु अनेकांतात्मक ही है,...' वस्तु कैसी है? अनेक आत्मक, अनेक धर्म स्वरूप. अनेक धर्म स्वरूपका अर्थ? एक पदार्थमें ज्ञान है तो ज्ञान दूसरे गुणरूप नहीं. और एक द्रव्य एक गुणरूप नहीं. एक गुण एक द्रव्यरूप नहीं. एक गुण एक द्रव्यरूप है? एक पर्याय एक गुणरूप है? एक गुण एक पर्यायरूप है? एक गुण एक द्रव्यरूप है? एक द्रव्य गुणरूप है? नहीं. गुण एक पर्यायरूप है? नहीं. ऐसी अनेकांत वाणी, भगवान! आपकी है, दूसरा वल कल सकता नहीं, दूसरेमें है नहीं. देभो! देवकी वाणी कैसी है उसकी पहचान (करवाते हैं). पंडित नाम धारण करके बड़े-बड़े शास्त्र पढ ले, और पढ ढावा, कलते हैं न? र्तना पढकर पढ ढावा. पढकर छोड दिया. लेकिन उसका मर्म क्या है, उसका रहस्य क्या है, उसे समझे नहीं तो चैतन्यका पता लगता नहीं.

'जबकि वस्तु...' अनेक अंत धर्म स्वरूप (है). आत्मक है न? अनंत धर्मस्वरूप है. 'अेकान्तात्मक नहीं. आपकी वाणी, समस्त संसाररूपी विषको नाश करनेवाली है; किन्तु बुद्ध आदि की वाणी संसाररूपी विषका नाश करनेवाली नहीं, बल्कि संसाररूपी विषको उत्कट करनेवाली (बढानेवाली) ही है.' विषको बढानेवाली है. भगवानको ऐसा नहीं बोलते. लौकिक, इलाने.. अरे..! भगवान किसको कलते हैं? एक समयको आत्मा कलते हैं, क्षणिक पर्यायको ही आत्मा कलते हैं. वल भगवान कैसा? त्रिकालीको लूल जलते हैं. अकेले त्रिकालीको आत्मा कलकर, पर्यायका अंश उसमें है उसको नहीं मानते हैं, वल ली आत्माको नहीं पहचानते, जनते नहीं. अेकांत माननेवाला अेकांत... देभो! भगवानका मार्ग, प्रलु! अनेकांत है उसका अर्थ, कोर ली द्रव्य, कोर ली गुण, कोर ली पर्याय अपनेसे है और परसे नहीं है. उसका नाम अनेकांत है. और स्याद्वाद उसका वाचक है. कलनेवाला. कथंचित् मुष्य-गौण करके कलता है. जब नित्य कलता है, तब अनित्य गौण रह जलता है. अनित्य कले तब नित्य गौण रहता है. ऐसी बात स्याद्वाद वाणीमें आती है. वाणी अनेकांत तत्त्वको अतानेवाली है. तो भगवानकी वाणी है, ऐसी वाणी बुद्धकी लोती नहीं. बल्कि विषको बढानेवाली है.

'आपकी वाणी, समुद्रके मंथनके समय...' अन्यमतिकी बात ली. अन्यमें वल बात है न? उसकी बात ली. ये तो दृष्टांतकी बात है. सिद्धांत उसमें सिद्ध नहीं करना है. उस समय लोनेवाला धुधवाट, धुधवाट.. धुधवाट समजते लो? आवाज. धु.. गरजता है न? जैसे भगवान आप बैठे थे. ऐसी वाणी नीकली, आवाज करती लुई. बारल योजनमें लाणों, कोडों मनुष्य लों.. ऐसी आवाज करती लुई आपकी वाणी है. उसके 'समान अत्यंत

ઉન્નત તથા ગંભીર છે.' વાણી કેસી છે? ઉન્નત તથા ગંભીર છે. અનંત-અનંત ભાવકો બતાનેવાલી વાણી, આપકે સિવા દૂસરે કિસીકો હોતી નહીં. ઐસી ભક્તિકા ભાવ છે.

(શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ!)

